ओ३म्

खालसा इतिहास दर्पण

द्वितीय भाग

गुरु विरजानन्द दण्डी
... पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 5098
दयानन्द महिला म...

... तथा प्रकाशक—

आचार्य स्वामी रुद्रानन्द शास्त्री
आर्य मुनाज़िर
आर्य समाज शाहाबाद (करनाल)

प्रथमवार १०००] माघ २००७ [मूल्य ।)

भूमिका

हिन्दू और सिक्ख भाइयों में बहुत सी बातें विवादस्पद चली आ रही हैं। और कुछ साधारण जन मिथ्या इतिहास के अथवा मौखिक कथाओं के आधार पर गुरुमहाराज को और का और कुछ समझ रहे हैं। न तो स्वयं इतिहास पढ़ते हैं और न निर्णय करनेका ज्ञान रखते हैं। भजनोपदेशनों ने और अधकचरे ज्ञानियों ने गुरुजी महाराज को नाना रूप देने की चेष्टा करके अन्धकार में स्वरूप दिखाया है। जिसको देखकर मनुष्य भूल रहे हैं। इसलिए मैंने के १म. भाग एवं प्रस्तुत २म. भाग द्वारा प्रकाश में रूप दिखाया है। पड़ने वाले सिनेमाघर से बाहिर आकर पढ़ेंगे तो बड़ा आनन्द आवेगा। मैंने कहीं भी द्वेष अथवा पक्षपात से काम नहीं लिया और न मेरा हौलडर कहीं व्याकुल हुआ है, श्री पूज्य गुरु गोविन्द सिंह जी की भांति छलांगें लगाता भ्रान्ति सागर से पार हो गया है। इससे जनता को बहुत लाभ होगा।

निवेदक—

आचार्य स्वामी रुदानन्द शास्त्री

आर्य मुनाज़िर

खालसा इतिहास दर्पण दूसरा भाग

खालसा इतिहास दर्पण के प्रथम भाग में यह स-प्रमाण सिद्ध किया गया है कि गुरु गोबिन्दसिंह जी महाराज ने अपना मत चलाने के लिये अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया और पंजाब छोड़कर दक्षिण की ओर चले गये। इस दूसरे भाग में यह सिद्ध किया जावेगा, कि गुरु जी का बहुत सा काल हिन्दू (आर्य) लोकों के साथ लड़ने भिड़ने में लगा क्योंकि गुरु महाराज हिन्दु (आर्य) लोकों को खालसा बनाना चाहते थे। और वैदिक सनातन धर्म को मिटाना चाहते थे। जिसके कारण हिन्दू राजे और ब्राह्मण रुष्ट हो गये थे। जैसा कि बाबू तेजासिंह जी रीटायर्ड एस. डी. ओ. ने जफरनामे के अनुवाद पृष्ठ२ पर लिखा है। "इस धर्म प्रचार को हिन्दू और पहाड़ी राजे सहन न कर सके। जब कि धर्म चर्चा में गुरुजी से कोई न अड़ सका, तो ब्राह्मणों ने हिन्दू पहाड़ी राजाओं को हिन्दू रक्षक बता कर गुरुजी के विरुद्ध कर दिया। बाबूजी विचित्र नाटक का प्रमाण देकर सिद्ध करते हैं।

"फतेशाह को पातबराजा लोह पड़ा हमसे बिनकाजा।"

जब फतेशाह श्रीनगर का राजा अकारण फौज लेकर गुरुजी पर चढ़ आया इधर से सिखों ने भी खूब डटकर मुकाबला किया। इस प्रकार पहाड़ी राजे. सिखों के अत्यन्त विरोधी हो गये। और दो तीन बार सिखों के साथ युद्ध हुआ परन्तु सिखों की शक्ति के आगे दब गये।

वैशाख संम्वत् १७५६वि० को गुरु महाराज ने सिखों की परीक्षा लेकर पंज प्यारे (१) भाई दयासिंह (२) भाई धर्मसिंह जी (३) भाई हिम्मतसिंह जी (४) भाई मोहकम सिंह जी (५) भाई साहिबसिंह जी को जाति पांति जनेऊ आदि का बन्धन तोड़ अमृतपान करा अभेद कर दिया और भविष्य के लिये यही मर्यादा संसार में प्रचार करने के किये श्री आनन्दपुर में केसगढ़ पहाड़ पर एक बड़ा भारी दरबार लगाकर आज्ञा दी यथा—

भूठे यज्जू जतनतिआगो। खड्गधार असिधुज पग लागो॥
बिखिया किरिया भइण तिआगो। जटा जूट रहबो अनुरागो॥

इस प्रकार के उपदेशों को सुनकर पहाड़ी राजे भी जो सभा में आए हुये थे। इस प्रकार कहने लगे।

यह तो रहित कठिन नहीं होई। चार वर्ण से करहीं रसोई॥
वेद लोकमत सबे त्यागी। श्री असिधुज के ह्वै अनुरागी॥

द्विज खत्री पूतान के जज्जू धर्म तुराई।
लै भोजन इकट्ठा कीयो बूड़ी बात बनाई॥

पूजा मन्त्र क्रिया सब कर्मा। यह हमसे छूटत नही धरमा॥
पित्रि दंड देवन के कामा। कत छूटत हमसे अभिरामा॥
(गुरु बिलास पातशाही १०)

अब सर्व हिन्दू समाज को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि बा० तेजासिंह जी के लेख से यह सिद्ध होता है। हिन्दू लोक और पहाड़ी राजे गुरु महाराज के शत्रु इस लिये हो रहे थे, कि गुरु जी यज्ञोपवीत तुड़वा रहे थे और सर्व कर्म धर्म छुड़वा रहे थे। और खालसा पंथ चला रहे थे। इस लिए राजाओं से युद्ध होते रहे। इसी बात को ज्ञानी ज्ञानसिंह जी ने माना है और खासला इतिहास में स्पष्ट लिखा है जो कि मैंने प्रथम भाग में लिख दिया है। फिर जाने लोक यह क्यों मानते हैं, कि सिखों ने हिन्दू धर्म की रक्षा की और हिन्दू धर्म बचाया। मैं चेलेंज करता हूं कोई सिद्ध करे सिखों ने हिन्दुओं की रक्षा की, और मुसलमानों को मारा। ३१ वर्ष खालसा हिन्दुओं से जटा जूट रहने के लिये लड़ता रहा। बादशाह से कोई लड़ाई नहीं थी।

गुरु जी पटना में उत्पन्न हुये जैसे स्वयं कहते हैं—

तहीं प्रकाश हमारा भयो। पटना शहर बिखेभव लयो॥
(विचित्र नाटक अ० ७)

आप ६ वर्ष की अवस्था में आनन्दपुर आए पिता जी के देहान्त के पश्चात् गद्दी पर बैठे। आप के पास हिन्दू मुसलमान दोनों आते थे। आप दोनों को नौकर रखते थे। जो घोड़ा और हथियार लेकर आता था। उस पर बहुत खुश होते थे। इस प्रकार आप के पास बहुत सी सेना इकट्ठी हो गई। पहाड़ी राजाओं को संदेह हो गया कि गुरु जी हमारे राज पर अधिकार जमाना चाहते हैं (मेरी सम्मति में यह बात नितान्त सत्य है राजाओं को वैसे ही मिथ्या संदेह नहीं हुआ) हिन्दू राजाओं के प्रान्त में कुछ लूट मार भी करते थे। और हिन्दू धर्म के विरुद्ध प्रचार भी करते थे जिसको राजे सहन नहीं कर सकते थे। इस कारण गुरुजी की शक्ति को भंग करने के लिये उन्होने यह चाल चली। आती हुई संगतों को दिक करना और लूटना आरम्भ कर दिया। पहाड़ी राजाओं का संकेत पाकर रांघड़ों ने भी दिन दिहाड़े लूटना आरम्भ कर दिया। एक दिन एक सिख ने आकर कहा अमुक ग्राम में एक संगत का माल सामान बड़ी बुरी भाँति लूटा गया है। जो मुख से कहा नहीं जाता। इतने में दूसरे सिख ने भी ऐसा ही समाचार सुनाया। वह कहकर चुप ही हुआ था तब तीसरा आकर बोला—

संगत निधान जूकी लइ खोस आवती।
सुण के बैण नाथ मौन रहे साथ॥
बरनीन गाथ कुछ और मन भावती।
घनी बेर सुन पाए कहा नाथ ऐसे भाए॥
देखो भाई चित्त लाइ संगत के यात्री।
खुसियों खुसियों कहे संग,जोन कोऊ कहे ढंग॥
मार लूट सूबन को, संगति जो ले आवती।

(गुरु बिलास पाठ १०) तवारीख खालसा कृत ज्ञानी लालसिंह दूसरा भाग पृष्ठ ७६१।

समीक्षक–गुरु जी का पहाड़ी राजाओं से और अन्य हिन्दुओं से कितना मेल था कैसे प्रेम भरे शब्दों से गुरु जी महाराज कह रहे हैं अरे खुसियो खुसियो करते आते हो परन्तु पहाड़ी राजाओं को लूटने की कोई बात नहीं कहता। गुरुजी के भाव यह है अरे लुटकर क्यों आते हो वाई धाराओं के जो १२ सूबे उस समय थे उनको क्यों नहीं लूटते कितने दलेराना वीरता के भरे हुए शब्द हैं। वह दीनता नहीं चाहते थे। हिन्दू उनको अपने नज़र नहीं आते थे। हिन्दू दुर्बल और निर्बल नहीं थे आजकल के हिन्दुओं की भान्ति भीरूता दिखलाकर सिखों की मिथ्या प्रशंसा के गीत न गाते थे। वह गुड़ के शर्बत को अमृत समझ कर पान न करते थे। वह केस कच्छादि

को धर्म चिह्न समझकर यज्ञोपवीत तोड़कर पौह लिए सिख न बनते थे ईंट का जवाब पत्थर से देते थे, उधर खालसा भी वीरता से टक्कर लेता था भीरूता न दिखाता था चाहे अन्त में हारकर सिख भाग गये। आनन्दपुर छोड़ गये परन्तु रणजीत नगारा बजाते रहे इसका वृतान्त आनन्दपुर के युद्ध में पढ़ेंगे। गुरु जी का रणजीत नगारा बजता रहता था वीर पुरुषों और लुटेरों की रौनक लगी रहती थी। देखो तवारीख खालसा दूसरा भाग पृ० ७९३।

प्रश्न—पहाड़ी राजे झोली चुक थे इस लिये गुरु महाराज उनसे लड़ते थे।

उत्तर—वाह भइ वाह! घरों आई मैं ते सनेहे देवें तू। "पढ़े न लिखे नाम मुहम्मद फाज़िल" उन्मत्त टोले जरा बा० तेजासिंह और ज्ञानी ज्ञानसिंह से तो पूछो गुरुजी से क्या लड़ाई थी। पहाड़ी राजे वीर थे बादशाह से कभी भी नहीं दबे एक भी राजा मुसलमान नहीं हुआ न पहाड़ों पर शाही दब दबा था! नादौन की लड़ाई में शाही सेना के वह दान्त खट्टे किए कि भागते स्थान न मिला। नादौन का युद्ध आगे चलकर ब्यान करेंगे।

बाबू तेजासिंह जी रीटायर्ड एस. डी. ओ.।

सेवक पंच खालसा दीवान मुकाम पंच खंड डाक खाना धूरी। जफरनामे के अनुवाद के आरम्भ में पृ० २ (अ) पर लिखते हैं। जब इन्होंने सच्चे अकाली धर्म को संसार में प्रकट करना चाहा तो उस समय हिन्दवासी जो अपने अज्ञान के कारण मूर्ति पूजा आदि ३३ करोड़ देवताओं के पीछे लगे हुये थे, उनको यह उपदेश बहुत बुरा लगा। परन्तु इस प्रचार का यह प्रभाव हुआ कि अनगिनत लोग पाखंड को छोड़कर सिखी मंडल में दाखिल होने लगे। (सं० कौन अनगिनत भोले अनपढ़ नाई छींबेतर खालादि) परन्तु इसको हिन्दू और पहाड़ी राजे न सहन कर सके इत्यादि जो पूर्व भी लिखा गया है विद्वान् स्वयं पढ़ सकते हैं। बाबू जी विचित्र नाटक का प्रमाण देकर लिखते हैं—

"पातशाह को पातव राजा। लोह पड़ा हमसे बिन काजा।"

जब फतेहशाह बिना कारण सेना लेकर गुरु जी पर चढ़ आया सिखों ने डट कर मुकाबला किया। फतेशाह हारकर पीछे हट गया।

समीक्षक—मैंने उन कोल्हुओं को समझाने के लिये दो बार लिखा है बताएँ युद्ध झोलीचुक होने के कारण हुआ है या खालसा धर्म के प्रचार और सनातनधर्म के खण्डन के कारण देखा कितना साफ है प्रथम पृष्ठ और इसको मिला

कर पढ़ें पता लग जाएगा कि असली मामला क्या है।

गुरु जी जफरनामा हकायत ६१ में फरमाते हैं और बड़े अभिमान से भोली चुक ढंग से औरंगजेब को लिखते है।

बखशश शाह शाहान औरंगजेब।
कि चालाक दस्त अस्त चाबक रकेब॥ हकायत ८५

अर्थ—ऐ बादशाहों के बादशाह औरंगजेब तू भागवान् है। तू हाथ का चालाक और घोड़े का असवार है। और चालाक है।

कि हुसन जमाल असत रोशन जमीर।
खुदावन्द मुलक असत साहिब अमीर॥ ८६

अर्थ—सुन्दर है, मनका प्रकाशमान् है। देशों का मालिक और अमीरों का स्वामी है।

कि तरतीब दानश ब तदबीर तेग।
खुदाबन्द देगो! खुदाबन्द तेग॥

बुधिका सुधारक और खड्ग चलाने की विधि को ठीक जानने वाला है। लंगर का मालिक और तलवार का धनी है।

कि रोशन जमीर असत, हुसनल जमाल।
खुदाबन्द बखशिन्द हे मुलको माल॥ ८५

मनका प्रकाशमान है। रूप का सुन्दर है। मुलक और माल के बखशने वाला है।

बबख़शश कबीर असत दरजंग कोह।
मलायक सिफ़त चूं सुरयाश कोह। ८६

अर्थ—तू बड़ा दाता है। और युद्ध में पहाड़ है। है। देवताओं जैसे गुण है। और बड़ा प्रतापी है।

शहनशाह औरंगज़ेब आलमीं।
किदात इदौर असत दूर असत दीन॥ ६०

अर्थ—हे शहनशाह औरंगजेब आलमगीर। तू समय का सरदार है परन्तु धर्म से दूर है।

मन मकुशत नम कोहियां बुत प्रसत।
किआं बुत प्रसतन्दो मन बुत शकसत॥ ६१

अर्थ—मैं मूर्ति पूजक पहाड़ियों के मारने वाला हूं। क्योंकि वह मूर्तियों के पुजारी हैं और मैं मूर्तियां तोड़ने वाला हूँ।

समीक्षक देखिए गुरु गोबिन्दसिंह जी ने औरंगजेब की कितनी प्रशंसा की है और कहा है मैं बुतप्रस्तों को मारता हूँ तू इनकी सहायता करता है इस कारण मुसलमान नहीं। अब सज्जन विचारें झोली चुक कौन है।

गुरु महाराज को राजे मूर्ति पूजक और यज्ञोपवीत धारी होने से शत्रु जान पड़ते थे।

आनन्दपुर पर राजाओं का आक्रमण

तवारीख खालसा द्वितीय भाग पृ० ७६१ पर लिखा

है। इसके पश्चात् भीमचन्द कहलूरिए (बिलासपुरिए) ने गुरु महाराज को आनन्दपुर में से निकल जाने को कहा। गुरु जी ने बिना युद्ध के निकलने से इनकार कर दिया। भीमचन्द ने गुरुजी की शक्ति का कम अन्दाज़ा लगाया। इस लिए थोड़ी सी सेना लेकर आनन्दपुर पर चढ़ आया। परन्तु हार गया अब दूसरी लड़ाई की तैयारी करने लगा राजाओं को इकट्ठे करने लगा। राजे सर्व प्रचार के कारण और परस्पर लूट मार के कारण कट्टर शत्रु हो रहे थे। खूब तैयारियां होने लगी, खालसा जी भी तैयार थे, चाहे सेना थोड़ी थी धन अल्प था, परन्तु वीरता थी और सिद्धान्त ही यह था जैसे—

यह दुनियां रगड़े झगड़े की। यहां पूछ न काहल पगले की।
कृष्ण ने झगड़ा कीता सी। उस चुक बनाई गीता सी।
नाश कौरव वंशदा कीता सी। संग भीम ते अर्जुन लीता सी।
जिन तोड़ी हड्डी जाड़े की। है दुनियां रगड़े.....

गुरुजी लड़ाके खूब थे चाहे उनको विजय प्राप्त नहीं हुई आनन्दपुर भी हाथ से चला गया परन्तु ३१ वर्ष लड़ते झगड़ते और युद्ध करते रहे। सम्भावना तो राज की थी परन्तु दैव ने जो चाहा सो हुआ।

जब इस युद्ध की तैयारी का राजा मेदनी प्रकाश नाहन वालिए को पता लगा तो अपना दीवान भेजकर

गुरुजी को नाहन बुला लिया।

गुरु जी सर्व परिवार व मंडल लेकर ८ जेठ सं० १७४१ वि० को नाहन चले गये। प्रान्त रमणीय और मनोरम था। युद्ध से पीछा छूटा चित्त लग गया। राजा मेदनी प्रकाश जी के साथ शिकार खेलते रहे। यथा विचित्र नाटक में लिखा है—

राज साज जब हम पै आयो। यथा शक्ति तब धर्म चलायो।
भान्ति भान्ति बन खेल शिकारा। मारे रीछ रोझ झंखारा।
देश चाल हमते पुन भाई। शहर पांवटा की सुध लई।
कालिन्दी तट करें विलासा। अनेक भान्ति के देख तमाशा।

वि० ना० अ० ८

यह वृतान्त अपना स्वयं लिखा है। एक दिन यमुना जी के तीर पर घूम रहे थे स्थान की प्रशंसा की मेदनीप्रकाश जी ने अवसर पाकर कहा यहीं पर नगर बसालो उ० क०। प्यासे को क्या चाहिए पानी भूखे को क्या चाहिए अन्न, उजड़े हुए को क्या चाहिए एक झोंपड़ी। पांवटा नगर बसा लिया आनन्द के साथ रहने लगे। आनन्दपुर को भूल से गए। १७४२ में पांवटा बसाया।

गुरु जी पांवटा साहिब आराम से रहने लगे, परन्तु दैव गति से एक और आपत्ति आ पड़ी, भीमचन्द के

पुत्र का व्याह फतेचन्द की पुत्री से हुआ। गुरु महाराज ने कुछ भेंट भेजी। फतेहचन्द ने भीमचन्द को प्रसन्न करने के लिए उपहार स्वीकार न किया। और दीवान नन्दचन्द उपहार वापस ले आया और सारा वृत्तान्त सुनादिया। अब राजाओं से टन गई। १७४२ वि० में राजाओं ने गुरु महाराज पर हमला कर दिया। स्मरण रहे गुरु जी ने ५०० पठानों को नौकर रख लिया था जो कि औरंगजेब ने किसी कारण से नाराज हो कर निकाल दिये थे। बुद्धुशाह ने सिफारश करके नौकर रखा दिया था। अब युद्ध आरम्भ हुआ।

अथ भंगाली युद्ध वर्णन

भंगाली का युद्ध जिस में निम्न लिखित राजे सम्मिलित हुवे। राजा भीमचन्द कहलूरिया, राजा कृपालचन्द कटोचिया, राजा हरिचन्द हंडूरिया, राजा पृथिवीचन्द ढढवालिया, राजा फतेशाह गढ़वालिया इत्यादि राजाओं ने मिल कर दस सहस्र फौज के साथ आक्रमण कर दिया। गुरु गोविन्दसिंह जी भी मुकाबले पर डट गए। अभी थोड़ा ही काल युद्ध आरम्भ हुवे को हुआ था, पांच सौ उदासी साधु जो गुरु जी के लंगर से हलवा मांडा छका करते थे पत्रा बाच गए। दूसरी ओर जो पठाण

बुद्धुशाह की सिफारश पर रक्खे थे वह भी खजाना लूटने के बहाने से मुसलमानों के साथ जामिले। गुरु जी के पास बहुत थोड़ी सेना रह गई परन्तु गुरु जी धैर्यशाली वीर थे, और अकाल पुरुष का भरोसा था। इस से बुद्धुशाह (बदर-उद्दीन) अपने शागिरदों और पुत्रों को लेकर जंग में आ कूदे, इस कारण गुरु जी का साहस बढ़गाया और पाओं उखड़ते २ जम गए। चाहे गुरु जी महाराज की बहुत सी सेना मारी गई। और बुद्धुशाह के भी दो पुत्र लड़ाई में काम आए परन्तु जीत गुरु जी की हुई। गुरु जी ने भी इस लड़ाई का जिकर विचित्र नाटक में यूं किया है।

फते को पा तब राजा।
लोह परा हम से बिन काजा।
हरीचन्द क्रुद्धं। हने शूर सुधं।
भले बाण बाहे बड़े सैनगाहे।
रसं रुद्र राचे। महा लोह माचे।
हने ससस्त्र धारी। लिटे भूप भारी ॥१४॥

यह तो राजाओं के पक्ष के वीरों के नाम हैं। अब गुरु जी के पक्ष के वीरों के नाम लिखते हैं।

तहां शाह श्री शाह संग्रांम कोपे। पंचो बीरबंके पृथिवा पाय रोपे।
हठी जीतमल्लं, सुगाजीगुलाबं। रण देखिए रंग रूपं सहाबं।
हठयो माहरीचन्द गंगारामं। जिने कीतिय जीतियं फौजतामं।
कुपे लालचन्दं किए लाल रूपं जिनै गाजियं गरब सिंहं अनूपं।

तहांनन्दचन्दं कियो कोप भारं, लगाइ बरछी कृपाणं सम्भारो।
तुटी तेग तीखी फढ़े जम्म दण्डं हठ राखिए लज्ज बंसं सनढ़ं।

वि० ना० अ० ८

कृपालं कुप्यो है कुत को सम्भार सम्भारी।
हठी खान हयात के सीस झारी।
उठ छिछ इच्छं कटग मिझ जोरं।
मनो माखनं मटकी काहेनो फोरं।
तहां शाह संग्राम कीने अखारे।
घने खेत मोखान खूनी लतारे।
ताहां मातुलेयं कृपाल क्रुद्धं।
छक्यो छोभ छत्री करियो युद्धं सुद्धं।
सहे देह आपं महा बीर बाणम्।
करे खान बानी न खाली पलाणम्।
हण्यो साहिबचन्दं खेत्रं खत्राणम्।
हने खान खूनी खारासान भानम्।
तहां बीर बांके भली भान्ति मारे।
बचे आ लैके सिपाही सिधारे।

तबारीख खालसा पृष्ठ ८०६

अब गुरु जी की ओर के योद्धे। संगोशाह भंगाली के युद्ध में २००० सिपाही लेकर लड़ने गया था इस की ओर जीतमल्ल, गुलाबराय, माहरीचन्द, गंगाराम। (यह भूआ के पुत्र थे) दीवान नन्दचन्द, कृपालचन्द, पण्डित दयाराम, महंत कृपालदास, साहिबचन्द लालचन्द। तवा०

खा पृ० ८०५ विचित्र नाटक पृ० ८०५।

भंगाली पांउटा से ७ मील और जगाधरी से ३५ मील है। यह युद्ध बड़ा ज़बरदस्त हुआ गुरु जी के पक्ष के कुछ सिपाही तो मारे गए और कुछ भाग गए इस कारण कमान गुरु जी को अपने हाथ में लेनी पड़ी। जिस का ज़िकर विचित्र नाक में यूं आया हैं।

हरिचन्द कोपे कमाणं संभारं, प्रथम बाजियं ताण बाण प्रहारं।
दुति तकके बाण मोको चलायो, रखियो दैव मैं कान ह्वै के सिधयं।

त्रिती बाण मारयो सो पेटी मझारं,
बिधियं चलतियं द्वाल पारं पधारं।
चुभी चुंच चरमं कछु घाव आयं,
फलं केवलं जान दासं बचायं।

अभिप्राय—जब गुरु जी युद्ध में स्वयं आए तो राजा हरिचन्द जो बड़ा योधा और तीर अन्दाज़ था। युद्ध भूमि में आया और क्रोध के साथ एक बाण गुरु जी के घोड़े के मारा दूसरा गुरु जी के मस्तिष्क की ओर चलाया गुरु जी कहते हैं हम को देव ने बचाया अर्थात् दशमेश बाल २ बच गए और तीर कान को छूता हुआ आगे निकल गया "जाको राखे साइयां मार न सके कोई।" गुरु जी सम्भल भी न पाए थे कि तीसरा तीर कमरकसे में मारा जो पेटी

को चीरता हुवा पेट की त्वचा में जाकर लगा। विचित्र नाटक में लिखा है—

"जबै बाण लागयो तबै रोस जागयो।
कर लै कमाणं हणे बाण ताणम्।
सबै बीर धाए सरोषं चलाए।
तबै ताक बाणम् हन्यो एक ज्वाणं।

समीक्षक—इस युद्ध में बहुत राजे गुरु जी के विरुद्ध लड़ने के लिए आए जिन के नाम गुरु जी ने स्वयं विचित्र नाटक में दिए है जिन को हम ऊपर लिख चुके हैं। इस युद्ध का कारण यह बताया जाता है कि राजा भीमाचन्द अपने लड़के को फतेशाह के व्याहने गया। गुरु जी ने फतेशाह श्री निगरिए को उपहार भेजा उसने भीमचन्द की अप्रसन्नता के भय से उपहार लौटा दिया इस कारण युद्ध हुआ। और राजाओं ने आक्रमण किया परन्तु गुरु जो कहते हैं 'फतेशाह को पा तब राजा। लोह परा हम से बिन काजा"। गुरु महाराज इत युद्ध को अकारण ही बतलाते हैं, यह भी कारण नहीं हो सकता, कि गुरु जी उपहार भेजें और फतेशाह अस्वीकार भी स्वयं करे और लड़ाई भी खुद करे। मानलो भीमचन्द से तो शत्रुता थी अन्य राजाओं के क्या सिर फिरे हुए थे जो

गुरु गोबिन्दसिंह जी जैसे पूज्य बीर के साथ लड़ें जिस बीर ने अपने पूज्य पिता जी का मातृ भूमि के लिए सिर बलिदान कर दिया हो अथवा बलिदान के लिए उपदेश किया हो। हमारे विचार में युद्ध का कारण निज पन्थ प्रचार और हिन्दु धर्म का खण्डन था जिस से सर्व राजे और पण्डित खिजते थे। हम बतला चुके हैं वह यज्ञोपवीत चोटी धोती और यज्ञ वेद स्मृति का बहुत खण्डन करते और इन को आडम्बर अर्थात् डिम्भ कहते थे और धर्म के स्थान सम्प्रदाय का प्रचार करते थे। कुछ इतिहास लेखकों ने लिखा है यह देश द्रोही थे और गुरु जी महाराज देश हितैषी थे दूसरे हिन्दू बादशाह के झोली चुक थे। परन्तु इस युद्ध में बादशाह का कोई हाथ नहीं पाया जाता बादशाह जब यज्ञोपवीत तुड़वा रहे थे। फिर हम कैसे मानलें कि वह बादशाह के पक्षपाती या टोडी थे। गुरु जी ने कौनसी देश हित की बात की। महाराजा मेदनीप्रकाश ने गुरु जी को नाहन में भूमि दी अपने पास बसाया साथ शिकार खेलते रहे किसी भी राजा की मित्रता किसी मुसलमान से न थी गुरु जी के बहुत से मुसलमान मित्र थे। जैसे बदरउद्दीन आदि जो हमने दूसरे स्थान पर लिखे हैं।

गुरु जी के संग जो मुसलमान थे उनके नाम

कालेखान, नज़ावतखान, भीखनखान, हयातखान और ५०० पठान थे जो फिर विरुद्ध हो गए थे। परन्तु भीखणशाह और बुद्धुशाह तो अन्त तक साथ रहे। बुद्धु शाह के दो लड़के इस युद्ध में मारे गए। गुरु जी की तो औरंगजेब से भी मित्रता थी जिसको हम आगे चलकर सिद्ध करेंगे जरा मुक्तसर का युद्ध होलेने दो। फिर ज़फर-नामा भी पढ़कर सुनाएंगे जिस को सुन कर आश्चर्य हो जाओगे। पण्डित लोगों से तो गुरु महाराज की बिल्कुल ही नहीं बनती थी। हिन्दू धर्म की रक्षा का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता था। यहां साम्प्रदायक रोग था इसी कारण बाई धारों के सर्व राजे गुरु जी के विरोधी हो चुके थे उन राजों के नाम। जसवान कांगड़, कुल्लू, सुकेत, चम्बा, मण्डी, नूरपुर कोटलेहर, दातारपुर, जम्मू, चम्बा, मानकोट, बसहोली, सांबा, भद्रवाह, चनेनी, जसरोटा, कसटवार-हलकांडूगर में हैं। विचित्र नाटक बताता है—"जसो ढढवालं, मधुकर सुसाहं=जसवालिए। अर्थात् जस-रोटिए। ढढवाल एक गोत्र है। यह लोक अब भी होशि-यारपुर के जिले में मिलते हैं। राजा भीमचन्द कहलूरिया केसरीचन्द जसवालिया, राजा सुखदयाल जसरोटिया,

राजा कृपालचन्द कटोरिया। राजा फतेशाह श्रीनगरिया, राजा हरिचन्द हंडूरिया। राजा पृथ्वीचन्द ढढवालिया। प्रसिद्ध राजे थे जिनके साथ गुरु जी युद्ध करते रहे। बादशाह से इस समय तक कोई युद्ध नहीं। कितना स्पष्ट है। उपहार के कारण भंगाली युद्ध हुआ जिस को गुरु महाराज ने भी स्वीकार किया है और बिचित्र नाटक में व्यान दिया है वह लोक इतिहास ज्ञान से शून्य है जो कहते हैं हिन्दू बादशाह के झोलीचुक थे अथवा कहते हैं युद्ध हिन्दुओं की रक्षा हेतु हुआ। यह बिल्कुल गलत है। हिन्दुओं की रक्षा का इन दोनों युद्धों में प्रश्न ही नहीं था। बादशाह का एक भी सैनिक युद्ध में शामिल न था। फिर गुरु महराज के पास रक्षा की कोई शक्ति न थी। हिन्दू गुरु जी की अपेक्षा बलवान थे। गुरु जी औरंगजेब की सहायता से लड़ रहे थे। उन्हों ने तो पिता का वैर भी नहीं लिया उल्टा बादशाह से मिल गए जिसको मैं आगे चल कर व्यान करूंगा। जो जफ़रनामे में स्पष्ट लिखा है गुरु जी को बादशाह ने बुलाया था आप बादशाह की ओर चल पड़े परन्तु मार्ग में पता चलगया कि औरंगजेब मर गया, जिस आशा को लेकर गुरु जी चले थे वह पूरी न हुई। आशा लताओं पर पानी पड़गया फिर भी गुरु जी

उदास नहीं हुए प्रत्युत बहादुरशाह के साथ जा मिले। यह मेल मिलाप सिद्ध करता है, गुरु जी का मुगलिया खानदान से शत्रुता नहीं थी, विशेष कारण जिस ओर चाहते हो जाते थे। हिन्दुओं की रक्षा अभीष्ट होती तो इस प्रकार मुसलमान बादशाह के बुलावे पर क्यों चले जाते। हिन्दुओं के रक्षक थे तो हिन्दुओं से लड़े क्यों। हिन्दु राजाओं से लड़कर आनन्दपुर क्यों छोड़ा। आनन्दपुर छुड़ाना पहाड़ी राजाओं का उद्देश्य था न कि औरंगजेब साहिब का। जैसा कि बाबू तेजासिंह जी रिटायर्ड ऐस० डी० ओ ने जफ़रनामे की भूमिका में लिखा है। परन्तु अन्य धर्मियों को खालसा जी का यह बढ़ता हुआ तेज न भाया और भीतर ही भीतर अनेक प्रकार की चालें चलने लगे। जिसके कारण खालसा जी सदैव के लिए संसार से मिट जावे। परन्तु जब चालों से काम न चला तो राजे प्रकट रूप में विरोधी हो गए। ब्राह्मण जातिपाति और यज्ञोपवीत की रीति को टूटता हुआ देख कर अत्यन्त कोलाहल करने लगे। और पहाड़ी राजाओं से कहने लगे हिन्दू धर्म लुट गया धर्म भ्रष्ट हो गया कह कर राजाओं को अत्यन्त शत्रु कर दिया। कुछ राजे तो पहले ही शत्रु थे शेषों को भी शत्रु कर दिया। राजाओं ने परस्पर मिल-

कर यह प्रस्ताव पास किया कि गुरु गोविन्दसिंह जी को जो हिन्दुओं की जातिपाति का विरोधी है और मूर्तिपूजा को न मानने वाला है। इस को ऐसा कष्ट दिया जावे कि नाक से दम भी लेने न पावे। अतः सब राजाओं ने लिख कर भेजा कि आप अपने उपदेश और व्याख्यान बन्द करें, अथवा हमारे प्रान्त को छोड़दें और आनन्दपुर को खाली करदें। नहीं तो आप के विरुद्ध चढ़ाई की जाएगी ज़फ़रनामाह पृष्ठ ५। (ह) कितना साफ है हिन्दु राजाओं को गुरु महाराज ने कैसा शत्रु बना रक्खा था, केवल राजे ही शत्रु न थे ब्राह्मण भी हिन्दु धर्म के खण्डन से बहुत दुःखी थे फिर गुरु जी को हिन्दुओं का रक्षक कहना कितना भोला पन है।

गुरु गोविन्दसिंह जी ने जितनी हानि सनातन धर्म को पहुँचाई है और अब भी सिख पहुँचा रहे हैं। दूसरा कोई भी सम्प्रदाय इतनी हानि नहीं पहुँचा रहा। यह लोक धन भी हिन्दुओं से लेते हैं और घृणा भी इन्हीं से करते हैं। धर्म भ्रष्ट भी इन्हीं का करते हैं। हिन्दु हैं कि "मान-न मान मैं तेरा मेहमान" बन कर गले लिपटते जाते हैं। सिख कहते हैं हम हिन्दू नहीं। और हिन्दू कहते हैं सिख हिन्दू हैं। भले लोको आप इन को हिन्दू बना कर क्या

लेंगे। कोई लाभ तो बताओ सम्भलो और सोचो। जब पहाड़ी राजाओं ने यह लिख कर भेजा तो गुरु महारज ने यह उत्तर दिया।

जो प्रभु जगत कहा सो कहिहों। मृत लोक ते मौन न रहीहौं।
(विचित्र नाटक)

अर्थात् मुझे जो अकाल पुरुख की आज्ञा है। मैं उस का उपदेश देता हूं। तुम्हारे जैसे संसारी लोगों के भय से उपदेश नहीं छोड़ सकता। दूसरी बात आनन्दपुर को खाली करने की है। क्यों कि यह भूमि हमारे बुजुर्गों ने तुम्हारे बुजुर्गों से मोल ली है तुहारा कोई अधिकार नहीं। हां यदि तुम लड़ाई करना चाहते हो, तो खालसा धर्म दोखिओं की खबर लेने को तय्यार है। यह सुन कर पहाड़ी राजे अत्यंन्त क्रोधित हुए और अपनी अपनी फौजें लेकर आनंदपुर पर चढ़ आए। समीक्षक-हिंदू लोग किंचिन मात्र भी बिचार करें हिंदूओं को धर्म दोषी कहा है और कहा है खालसा हर समय खबर लेने को तय्यार है।

हम लोक धर्म दोषी है तो हमारी रक्षा क्यों करते। यह जफ़रनामहकी भूमिका से लिख रहा हूं। बाबू तेजा-सिंह ने ज्ञानी लालसिंह के इतिहास से उधृत किया है।

सर्व खालला पन्थ इस बात को स्वीकार करता है यद्यपि मैंने इतिहास से आनन्दपुर के युद्ध का व्याख्यान लिखा है परन्तु यहां पर खालसा इतिहास का नचोड़ बाबू तेजासिंह जी रीटायर एस. डी. ओ. जीके कलम का लिखा हुआ आप लोगों की सेवा में उपस्थित करता हूँ।

पाठक गण को यह बताना आवश्यक है, कि जफ्फरन नामह क्या है जफ्फर नामह वह लेख है जो लेख शहनशाह औरंगज़ेब के पत्र में गुरुगोबिन्दसिंह जी ने लिखा था यह फारसी में है बा० तेजासिंह जी ने इसका अर्थ लिखा है और भूमिका लिखी है क्योंकि उन्होंने इतिहास की गवेषणा से लिखा है। वही मैं प्रमाण रूप से उपस्थित कर रहा हूँ।

तेजा सिंह लिखते हैं। अब खालसा जी ने चार दुर्ग बना लिये लोहगढ़, आनन्दगढ़, फतहगढ़, केसगढ़, तैयार कर लिये। और पहाड़ी राजे सूबा सरहन्द को २० हज़ार रुपया और एक लड़की भीमचन्द के वंश की देनी करके चढ़ा लाए। कीर्तपुर के पास एक घोर युद्ध हुआ दूसरा युद्ध १७ फाल्गुण सं० १७५६ वि० को हुआ, सिख बहुत थोड़े थे पहाड़ी राजाओं की और सूबासरहन्द की फौज बहुत अधिक थी इतिहास के कतिपय लेखकों ने

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 5098
दयानन्द मठ

लिखा है सिख दस सहस्र थे और पहाड़ी राजाओं की और सूबा की सेना दस लाख थी। उस समय सिख आनन्दपुर दुर्ग में घिरे हुए थे। बाहर से रसद अन्दर नहीं जा सकती थी क्योंकि हिन्दू और मुसलमान विरोधी थे सिख कोई किले से बाहिर न था अब सिखों की दशा बहुत बुरी हो गई थी देखो इतिहास दर्पण भाग प्रथम पृष्ठ २२। किं बहुना खालसा जी दुःखां ते भुखां दा मारिया, किले से निकल पड़ा और रात को निकला वहां तो फौज ने कुछ न कहा परन्तु सरसा नदी पर शत्रुओं की सेना ने चारों ओर से घेर लिया एक ओर से नदी का चढ़ाव दूसरी ओर वर्षा बड़े ज़ोर की होने लगी, इधर दस लाख फौज थी बहुत से सिख मारे गए कुछ नदी में डूब गए। माल सामान भी नदी में डूब गया माताओं को सिखो ने बड़ी कठिनता से पार किया और दिल्ली पहुँचाया। माता गूजरकोर और दोनों छोटियां साहिबजादियां नूं गंगाराम ब्राह्मण खेड़ी ले गया। आनन्दपुर बरबाद कर दिया, नगर को आग लगा दी सामान लूट लिया गया। जो कुछ पहाड़ी राजे चाहते थे वह हो गया अर्थात् आनन्दपुर खाली हो गया। प्रचार बन्द हो गया। यह आनन्दपुर का प्रथम युद्ध

केवल पहाड़ी राजाओं के साथ सूबा सरहन्द अथवा बादशाह का कोई हाथ न था। गुरु महाराज दृढ़ पन्थाई थे बार बार प्रचार बन्द करने को कहा परन्तु गुरु महाराज ने यही उत्तर दिया।

जो प्रभु जगत् कहासो कहिहों। मृत लोक ते मौन न रहिहों॥

(विचित्र नाटक)

इधर राजे सनातन धर्म की रक्षा के लिये जयकारे बोला रहे थे। घोर युद्ध हुआ मैदान भीमचन्द के हाथ रहा।

दूसरा युद्ध चमकौर का हुआ। गुरु महाराज यूं तूं करके सरसा नदी से पार होकर चल पड़े। इस समय गुरु जी के संग सौ, सवा सौ सिख थे। आप रोपड़ की ओर जा रहे थे। मार्ग में पठाणों ने आक्रमण किया, पीछे से राजाओं और सूबासरहिन्द की फौजों ने हमला कर दिया। बड़ी कठिनाई के साथ चालीस सिखों को साथ लेकर चमकौर के कच्चे किले में दाखिल हो गए। सेना ने किले पर गोला बारी करनी आरम्भ कर दी। किले में सामान बहुत कम था समाप्त हो गया। गोला बारूद भी न रहा खाने को भी कुछ न रहा अन्त में यही विचार हुआ तलवार से एकैकी युद्ध हो। अब बारी बारी से तलवारें लेकर सिख निकलने लगे। लाखों

आदमियों के सामने एक एक मनुष्य क्या शक्ति रखता था। एक २ करके सब कट गए अब शाहज़ादों की बारी आई। प्रथम बड़े शाहज़ादे अजीतसिंह तलवार लेकर निकले जो कतल किये गये इनके पश्चत् जुझारसिंह जी निकले वह भी शहीद हो गये। यह सुकमार १२, १० वर्ष के आयु के थे। जब सर्व सिख मारे गये केवल पाँव सात सिख शेष रह गये तो विचार हुआ गुरु महाराज छुपकर निकल जायें यदि वह मारे गये तो बड़ा बुरा होगा। गुरु जी ने भी प्रस्ताव स्वीकार कर लिखा। क्या करते फटे हुये अम्बर को टाकी कैसे लगे हिंदू राजे तथा प्रजा विरुद्ध सूबा सरहिंद शत्रु सिख कोई जीवत सहायता के योग्य न रहा। उदास होकर भाई सन्तसिंह जी को अपने कपड़े पहना कर गद्दी पर बैठा दिया। चार सिख पास रख दिये रणजीत नगारे का हुक्म दे दिया कि बजाते रहो आप निकलकर चल दिये। चमकौर का युद्ध समाप्त हुआ, गुरु महाराज का अपनी मातृ भूमि से नाता टूट गया चक्रवर्ती राज की अभिलाषा अँधेरी निशा में विलीन हो गई। धन्य है ऐसे पुरुष के जिसने पंथ के लिये कष्ट उठाए गुराई के वास्ते जंगलों में दौड़े फिरे परंतु अपने सिर न छोड़ा जहां अड़ गये वहीं अड़ गये।

टिप्पणी—पाठक वृन्द आपने आनंदपुर की लड़ाई के आरम्भ में बाबूतेजसिंह जी का लेख पढ़ा आपने लिखा २० हज़ार रुपया और एक लड़की का नाता देकर सूबा सरहिंद को अपनी ओर किया यदि हम इस बात को थोड़े देर के लिये सत्य मान लें तो मानना पड़ेगा, गुरु महाराज हिंदुओं को बहुत दुःख देते थे तभी ऐसा करना पड़ा आनंदपुर, चमकौर साहिब, भंगाली, पौंटा-साहिब, सर्व हिंदू राजाओं का राज था। भला बताओ कहां के हिंदुओं से प्रेम था। जहां रहते थे वहां शत्रुता करते थे। बंगाल, मध्यदेश, बिहार राजपूतानादि स्थानों से प्यार हो ही नहीं सकता था।

अब एक बात और ध्यान से सुनने योग्य है कि गुरु जी के चार युद्ध बड़े बड़े हुए जिन में से तीन का मैंने जिक्र किया है। प्रथम लड़ाई भंगाणीसाहिब में हुई इस का वृत्तांत आप लोग पढ़ चुके है। गुरु महाराज ने विचित्र नाटक में स्वयं ब्यान दिया है। जिस से स्पष्ट है यह युद्ध हिंदुओं से हुआ। दूसरा आनंदपुर, तीसरा चम-कौर। याद रहे सब से पहिला युद्ध आनंदपुर का प्रथम युद्ध था जो राजा भीमचंद से हुआ जिसके कारण आप राजा मेदनीप्रकाश के पास चले गए और पौंटासाहिब

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण कमांक .. 5098
दयानन्द महिला महा

यमुना के तट पर बसाया। वहां से फिर आनंदपुर आए। आपने चार युद्ध पढ़े, बताओ बादशाह से अथवा मुसल मानों से हिंदुओं की रक्षा के लिए कौनसा युद्ध हुआ गुरु महाराज ने जाति के हिसाब से एक भी मनुष्य की रक्षा नहीं की। यदि किसी सज्जन को ज्ञान हो तो बताने कृपा करें मैं मानजाऊंगा। तीसरे भाग में देवी सिद्ध करना राजाओं से मेल और नदौण का युद्ध तथा राजाओं से फिर शत्रुता का वर्णन और बादशाह से मित्रता का जिक्र आयेगा। और औरंगजेब और गुरु महाराज के पत्र व्यवहार का भी कुछ वृत लिखेंगे। हम सत्य और असत्य का निर्णय कराना चाहते हैं। हिंदुओं में जो भ्रांति है। सिख हिंदुओं से बलवान् थे और शूर वीर थे। हिंदू भीरु और निर्बल थे। हिंदू मार खाते थे, सिखों ने रक्षा की, इस भ्रम को दूर करना हमारा काम हैं। हम जीवित हिंदुओं को उठाना चाहते हैं। जो मनुष्य खालसा जी की मिथ्या प्रशंसा करते र हते है, वह खालसा इतिहास दर्पण का तीसरा भाग पढ़ें। खालसा जी पंजाब से कैसे हरणसिंह हुआ।

(इति शम्)